ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध-पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
Impact Factor-8.002 (SJIF)
Vol.-3; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2026
Page No.- 44-48
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

ओमकार
एम०एड० शोधार्थी (शिक्षा संकाय),
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा

Corresponding Author :

ओमकार
एम०एड० शोधार्थी (शिक्षा संकाय),
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति का उनके अध्ययन की आदतों एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

सारांश :– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति का उनके अध्ययन की आदतों एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन करना था। जैसा कि हम जानते हैं कि वर्तमान युग में सोशल नेटवर्किंग विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। अतः वर्तमान समय में यह जानना आवश्यक हो चुका है कि सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतो एवं समायोजन में किस प्रकार संबंध है। इस अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है और इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आंकड़ोंके विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन,एनोवा और सहसंबंध गुणांक जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

अतः अध्ययन के निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के विभिन्न स्तरों के आधार पर उनके अध्ययन की आदतों में तथा समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

प्रमुख पद : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति,अध्ययन की आदतें, समायोजन।

प्रस्तावना : पिछले एक दशक में सोशल नेटवर्किंग सबसे लोकप्रिय संचार साधनों में से एक बन गई है, जिससे यह समाज में सूचना साझा करने का एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है। आज हमारे जीवन के हर पहलू में सोशल नेटवर्किंग एक अभिन्न अंग है। व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली कुछ सोशल नेटवर्किंग साइटें (एसएनएस) हैं– व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, ट्विटर, यूट्यूब आदि। इन माध्यमों का प्रयोग केवल सामाजिक संपर्क के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षा में संवाद, सहयोग और सूचना–साझाकरण के लिए भी किया जाता है। सोशल नेटवर्किंग माध्यम अब केवल व्यक्तिगत संचार तथा मनोरंजन के साधन तक सीमित नहीं रह गए हैं बल्कि सोशल नेटवर्किंग के जरिए सामाजिक जागरूकता जनमत निर्माण तथा एक दूसरे के विचारों का आदान–प्रदान करना और सामूहिक गतिविधियों को संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसका एक तात्कालिक उदाहरण वर्तमान में दिल्ली के जंतर–मंतर पर देखा जा सकता है, जहाँ शिक्षा व्यवस्था और प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित मुद्दों को लेकर युवा विद्यार्थियों द्वारा धरना–प्रदर्शन किया गया। इस आंदोलन में भाग लेने वाले युवा विद्यार्थियों को जेनरेशन Z के संदर्भ में देखा जा सकता है, क्योंकि यह पीढ़ी डिजिटल और सोशल नेटवर्किंग के व्यापक उपयोग वाले परिवेश में विकसित हुई है।

इस आंदोलन में तत्कालीन शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग प्रमुख रूप से उठाई गई थी तथा सोशल नेटवर्किंग माध्यमों के द्वारा इस आंदोलन से संबंधित सूचनाओं का देश–विदेश में व्यापक प्रसार हुआ, जिसके कारण यह आंदोलन छात्रों तक सीमित न रहकर जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया। यह आंदोलन दिल्ली के जंतर–मंतर से प्रारंभ हुआ और शोधार्थी

द्वारा किए गए प्रत्यक्ष अवलोकन के अनुसार बिहार, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मणिपुर, पंजाब और चंडीगढ़ सहित देश के विभिन्न हिस्सों में इसका विस्तार देखा गया। इस दौरान आंदोलन में सार्वजनिक संपत्ति और जन–जीवन को हानि का सामना करना पड़ा तथा स्थिति को नियंत्रित करने हेतु सुरक्षा बलों द्वारा आवश्यक एहतियाती कदम उठाए गए। इस आंदोलन को कई सामाजिक और राजनीतिक वर्गों का समर्थन भी प्राप्त हुआ। इसी क्रम में आज़ाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री चंद्रशेखर आज़ाद जी द्वारा भी संसद परिसर में विद्यार्थियों के समर्थन में अपना मत व्यक्त किया गया। यह घटना दर्शाती है कि सोशल नेटवर्किंग के युग में छात्र आंदोलन किस प्रकार व्यापक सामाजिक चर्चा का विषय बन जाता है।

अतः यह घटना इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि सोशल नेटवर्किंग माध्यम वर्तमान समय में युवाओं के विचारों सामाजिक सहभागिता तथा सामूहिक गतिविधियों को प्रभावित करने की क्षमता रखती है, इसी सामाजिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति तथा उनके अध्ययन की आदतें एवं समायोजन के साथ सम्बद्धता का अध्ययन करना प्रासंगिक हो जाता है।

अर्जुन एवं जूना (2015), ने यह अध्ययन किया कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की आदतों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। 40 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया और अर्ध–संरचित प्रश्नावली द्वारा आंकड़े संकलित किए गए। विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन और टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रभाव विद्यार्थियों की आदतों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में परिलक्षित होता है।

नेगी एवं अन्य (2016), के द्वारा किए गए तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और गैर–सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धिमत्ता, परीक्षा चिंता एवं आदतों में अंतर का पता लगाना था। 166 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों का संग्रहण वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि से किया गया तथा विश्लेषण में माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध एवं टी–परीक्षण शामिल थे। निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी, सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक बुद्धिमान थे और उनकी परीक्षा चिंता एवं आदतें भी बेहतर पाई गईं।

मकवाना एवं कॉजी (2014), के द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके लिंग के आधार पर अध्ययन किया गया । इस अध्ययन का उद्देश्य यह था कि लिंग (लड़का एवं लड़की) के अनुसार विद्यार्थियों के समायोजन में क्या कोई अंतर होता है। सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा 120 विद्यार्थियों (60) लड़के एवं 60 लड़कियो) का चयन किया गया। आंकड़े एकत्र करने हेतु डॉ. पटेल द्वारा निर्मित "समायोजन सूची" का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण टी–परीक्षण के माध्यम से किया गया। परिणाम स्वरूप यह ज्ञात हुआ कि घर, विद्यालय तथा भावनात्मक समायोजन में लड़कों और लड़कियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

असोगवा एवं ओहोड़ (2023), ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए स्तरीकृत एवं उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधियों का उपयोग करते हुए 372 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 168 लड़के और 204 लड़कियाँ शामिल थीं। आंकड़े एकत्र करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन और टी–परीक्षण द्वारा किया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सोशल नेटवर्किंग के दुष्प्रभावों से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित हो रही है, अतः विद्यालयों में परामर्शदाताओं की नियुक्ति आवश्यक है ताकि विद्यार्थियों को सही दिशा में मार्गदर्शन मिल सके।

समस्या कथन : "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति का उनके अध्ययन की आदतों एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के मध्य अध्ययन की आदतों का उनके सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के संबंध में अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के मध्य समायोजन का उनके सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं अध्ययन की आदतों के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं समायोजन स्तर के सहसंबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उप समूहो के मध्य अध्ययन की आदतों में सार्थक अंतर नहीं है।
2. सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उप समूहो के मध्य समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं अध्ययन की आदतों में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं समायोजन स्तर में सार्थक सह संबंध नहीं है।

शोध कार्य सीमांकन : प्रस्तुत शोध कार्य जनपद उधम सिंह नगर (उत्तराखंड) के ब्लॉक खटीमा में स्थित दो सरकारी तथा दो गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों तक सीमित है। कुल 100 विद्यार्थियों

जिसमें (49 छात्र एवं 51 छात्राएं) को शोध में शामिल किया गया है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोध की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श : प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति स्तर का अध्ययन करने के लिए विभिन्न शिक्षण संस्थानों से 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सरल यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है जिसमें 49 छात्र व 51 छात्राएं शामिल है।

शोध उपकरण :

1. सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति मापनी (माथुर और शर्मा 2013 द्वारा निर्मित)
2. अध्ययन आदत मापनी (पल्सेन और शर्मा 2003 द्वारा निर्मित)
3. समायोजन मापनी (सिंह और सिंह 1971 द्वारा निर्मित)

सांख्यिकीय प्रविधियां :– प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, एनोवा तथा सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या :

उद्देश्य 01 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य अध्ययन की आदतों का विश्लेषण

परिकल्पना 01 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपसमूहो के मध्य अध्ययन की आदतों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1.1 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन की आदतों का मध्यमान एवं मानक विचलन

सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
अत्यधिक सकारात्मक अभिवृत्ति	15	57.80	7.485
सकारात्मक अभिवृत्ति	35	55.06	9.713
मध्यम अभिवृत्ति	46	56.48	8.110
नकारात्मक अभिवृत्ति	04	54.00	6.976
कुल	**100**	**56.08**	**8.530**

तालिका 1.2 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन की आदतों पर एनोवा परीक्षण का विश्लेषण

उपसमूह	वर्गों का योग	स्वतंत्रता अंश	एफ मान	सार्थकता स्तर 0.05
समूहों के मध्य	105.596	03	0.476	असार्थक
समूहों के साथ	7097.764	96		
कुल	**7203.360**	**99**		

उपरोक्त तालिका में अध्ययन की आदतों के आधार पर विद्यार्थियों के सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति अंकों में अंतर का अध्ययन करने के लिए एक–मार्गीय एनोवा परीक्षण किया गया। विद्यार्थियों को उनके अध्ययन की आदतों के चार समूहों में वर्गीकृत किया गया है:– अत्यधिक सकारात्मक अभिवृत्ति (संख्या 15, मध्यमान 57.80, मानक विचलन 7.485), सकारात्मक अभिवृत्ति (संख्या 35, मध्यमान 55.06, मानक विचलन 9.713), मध्यम अभिवृत्ति (संख्या 46, मध्यमान 56.48, मानक विचलन 8.110), तथा नकारात्मक अभिवृत्ति (संख्या 4, मध्यमान 54.00, मानक विचलन 6.976) है। इन समूहों के बीच अंतर का विश्लेषण करते हुए एफ–मान 0.476 प्राप्त हुआ, जहाँ स्वतंत्रता अंश (df_1) (समूहों के बीच) 3 और स्वतंत्रता अंश ($df2$) (समूहों के साथ) 96 है। एफ मान 0.476 जो 0.05 और 0.01 दोनों स्तरों पर क्रिटिकल मान (2.70 और 3.94 क्रमशः) से कम है। अतः यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया। जो यह स्पष्ट करता है कि सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर विद्यार्थियों के अध्ययन की आदतों में 0.05 व 0.01 के स्तर पर कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या 01 स्वीकृत की जाती है।

उद्देश्य 02 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य समायोजन का विश्लेषण

परिकल्पना 02 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उप समूह के मध्य समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2.1 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन

सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
अत्यधिक सकारात्मक अभिवृत्ति	15	49.67	16.194
सकारात्मक अभिवृत्ति	35	45.63	13.240
मध्यम अभिवृत्ति	46	51.61	11.630
नकारात्मक अभिवृत्ति	04	53.25	9.287
कुल	**100**	**49.29**	**13.011**

तालिका 2.2 : सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर एनोवा परीक्षण का विश्लेषण

उपसमूह	वर्गों का योग	स्वतंत्रता अंश	एफ मान	सार्थकता स्तर 0.05
समूहों के मध्य	781.397	03	1.565	असार्थक
समूहों के साथ	15977.211	96		
कुल	16758.590	99		

उपरोक्त तालिका में समायोजन के विभिन्न स्तरों के आधार पर विद्यार्थियों के सोशल नेटवर्किंग अंको में अंतर का अध्ययन करने के लिए एक–मार्गीय एनोवा परीक्षण किया गया है। इस परीक्षण में चार समूहों को शामिल किया गया। अत्यधिक सकारात्मक अभिवृत्ति (संख्या 15, मध्यमान 49.67. मानक विचलन 16.194), सकारात्मक अभिवृत्ति (संख्या 35, मध्यमान 45.63, मानक विचलन 13. 240), मध्यम अभिवृत्ति (संख्या 46, मध्यमान 51.61, मानक विचलन 11.630), और नकारात्मक अभिवृत्ति (संख्या 4, मध्यमान 53.25, मानक विचलन 9.287) है। इन समूहों के बीच अंतर का विश्लेषण करते हुए प्राप्त एफ–मान 1.565 और स्वतंत्रता अंश (df1) 3. स्वतंत्रता अंश (df2) 96 है। प्राप्त एफ मान 1.565 जो 0.05 और 0.01 दोनो सार्थकता स्तरों पर क्रिटिकल मान क्रमशः 2.70 और 3.94 मान से कम जो यह स्पष्ट करता है कि सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के विभिन्न स्तरों (जैसे अत्यधिक सकारात्मक, सकारात्मक, मध्यम, नकारात्मक) के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन में 0.05 और 0.01 सार्थकता के स्तर पर कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या 02 स्वीकृत की जाती है। **जमोरा एवं जुडिला (2015),** ने अपने अध्ययन में बताया कि सोशल नेटवर्किंग का अत्यधिक उपयोग व्यक्तिगत समायोजन, जैसे भावनात्मक संतुलन, पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, परंतु यह प्रभाव विद्यार्थियों की परिस्थितियों पर निर्भर करता है और हर बार सांख्यिकीय रूप से स्पष्ट नहीं होता।

उद्देश्य 03 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं अध्ययन की आदतों के मध्य सहसंबंध का अध्ययन।

परिकल्पना 03 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं अध्ययन की आदतों में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका 3.1 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं अध्ययन की आदतों के मध्य सहसंबंध गुणांक का विश्लेषण

चर	संख्या (N)	स्वतंत्रता अंश (df)	सहसंबंध (r)	सार्थकता स्तर 0.05
सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति	100	98	0.073	असार्थक
अध्ययन की आदत				

उपरोक्त तालिका में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 100 विद्यार्थियों के आंकड़ों पर किए गए परीक्षण में सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति (स्वतंत्र चर) और अध्ययन की आदतों (आश्रित चर) के बीच सहसंबंध गुणांक (r) 0.073 प्राप्त हुआ, जो अत्यंत ही निम्न, कमजोर सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है। इस सहसंबंध के लिए स्वतंत्र अंश (df) 98 और P–मान 0.470 है। चूँकि यह P–मान 0.05 के क्रिटिकल मान 0.470 > 0.05 से अधिक है, अतः यह इंगित करता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं अध्ययन की आदतों में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है। अतः संबंध सांख्यिकीय रूप से असार्थक है और शून्य परिकल्पना संख्या 03 स्वीकृत होती है।

उद्देश्य 04 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं समायोजन स्तर के सहसंबंध का अध्ययन।

परिकल्पना 4 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं समायोजन स्तर में सार्थक सह–संबंध नहीं है।

तालिका 4.1 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक का विश्लेषण

चर	संख्या (N)	स्वतंत्रता अंश (df)	सहसंबंध (r)	सार्थकता स्तर 0.05
सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति	100	98	–0.184	असार्थक
समायोजन				

उपरोक्त तालिका के आधार पर सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति एवं समायोजन के बीच एक विश्लेषण किया गया है। इन दोनों चर के लिए पियर्सन सहसंबंध गुणांक –0.184 पाया गया, जो यह संकेत देता है कि इनके बीच कमजोर और नकारात्मक संबंध को दर्शाता है। लेकिन यह सहसंबध 0.05 के स्तर पर सार्थक नही है। अतः यह इंगित करता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग एवं समायोजन स्तर में सार्थक सहसंबंध नहीं है। अतः संबंध सांख्यिकीय रूप से असार्थक है और शून्य परिकल्पना संख्या 04 स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :

1. सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों में कोई सांख्यिकी रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

2. सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति के विभिन्न स्तरों जैसे (अत्यधिक सकारात्मक, सकारात्मक, मध्यम, नकारात्मक) के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सांख्यिकी रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग एवं अध्ययन की आदतों में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सोशल नेटवर्किंग का प्रभाव विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों पर नगण्य है।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग एवं समायोजन स्तर में सार्थक सहसंबंध नहीं है। अर्थात सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति और समायोजन स्तर के मध्य सहसंबंध विश्लेषण करने पर नकारात्मक किंतु असार्थक संबंध प्राप्त हुआ है जो यह इंगित करता है कि दोनों में कोई परस्पर सांख्यिकीय संबंध नहीं हैं।

विवेचना : वर्तमान अध्ययन सोशल नेटवर्किंग अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों एवं समायोजन पर प्रभाव विषय पर केंद्रित था, जिसका उद्देश्य यह जानना था कि डिजिटल माध्यमों, विशेषकर सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्मस के प्रति विद्यार्थियों की सोच, दृष्टिकोण एवं व्यवहार उनकी शैक्षणिक दिनचर्या और सामाजिक समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन के दौरान प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि सोशल नेटवर्किंग का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों एवं समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक भी हो सकता है यदि सोशल नेटवर्किंग का उपयोग सीमित, उद्देश्य परक एवं रचनात्मक ढंग से किया जाए, वहीं यदि इसका प्रयोग अत्यधिक, अनियंत्रित एवं मनोरंजन प्रधान रूप में होता है तो यह अध्ययन में व्यवधान तथा सामाजिक एवं भावनात्मक असंतुलन उत्पन्न कर सकता है। यह कहा जा सकता है कि सोशल नेटवर्किंग आज के युग की एक अपरिहार्य आवश्यकता बन चुकी है, किंतु विद्यार्थियों के लिए इसका विवेकपूर्ण एवं संतुलित उपयोग ही उनके शैक्षणिक और सामाजिक विकास के लिए हितकारी सिद्ध हो सकता है। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि शिक्षा व्यवस्था, शिक्षकों एवं अभिभावकों को मिलकर विद्यार्थियों को डिजिटल साक्षरता, समय प्रबंधन एवं सकारात्मक ऑनलाइन व्यवहार की ओर प्रेरित करना चाहिए। अतः इस शोध ने यह प्रमाणित किया कि किशोर अवस्था में तकनीकी साधनों का प्रयोग यदि दिशाहीन एवं अव्यवस्थित हो, तो यह उनकी अध्ययन प्रवृत्तियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है, वहीं इसका सही उपयोग उनकी सृजनात्मकता, ज्ञानवृद्धि एवं सामाजिक समायोजन को सशक्त बना सकता है। अतः यह अध्ययन सामाजिक–सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक दृष्टिकोण से भी प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध होता है।

भावी शोध हेतु सुझाव : प्रस्तुत लघु शोध में समय अभाव व संसाधनों के सीमितता के कारण वर्तमान लघु शोध कार्य केवल जनपद उधम सिंह नगर के ब्लॉक खटीमा के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को अध्ययन विषय बनाया गया। भविष्य में इसे बड़े प्रतिदर्श पर भी संपादित किया जा सकता है। उत्तराखंड राज्य के अन्य जिलों में विस्तारित कर विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की तुलना की जा सकती है। कला, विज्ञान तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल नेटवर्किंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से जुड़े नकारात्मक पक्ष जैसे साइबर–बुलिंग, डिजिटल तनाव और सोशल फोबिया जैसे विषयों पर भी शोध किया जा सकता है। जिससे विद्यार्थियों की साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके। शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और डिजिटल साक्षरता के अंतर को आधार बनाकर यह अध्ययन किया जा सकता है कि यह विभाजन शैक्षिक उपलब्धियों और सोशल मीडिया उपयोग के स्वरूप को किस प्रकार प्रभावित करता है। कोविड–19 के पश्चात ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियाँ आम हो चुकी हैं। ऐसे में यह अध्ययन अत्यंत उपयोगी होगा कि ई–लर्निंग और सोशल नेटवर्किंग का विद्यार्थियों की सीखने की प्रवृत्तियों पर क्या संयुक्त प्रभाव पड़ता है। अध्ययन को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से आगे बढ़ाकर महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर भी लागू किया जा सकता है। वर्तमान अध्ययन मात्रात्मक विश्लेषण तक सीमित था। भविष्य में गुणात्मक पद्धतियों जैसे केस स्टडी, साक्षात्कार, या फोकस ग्रुप चर्चाओं के माध्यम से सोशल मीडिया के गहरे मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. **मकवाना, एम. डी., एवं काजी, एस. एम. (2014).** एडजस्टमेंट ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर जेंडर, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 2(1), पृ0सं0 5–12.
2. **अर्जुन, एम., एवं जूना, बी. (2015).** ए स्टडी ऑन द इम्पैक्ट ऑफ सोशल नेटवर्किंग साइट्स अमंग हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशलसाइंसेज एंड मैनेजमेंट, 2(4), पृ0सं0 339–342.
3. **जमोरा, जी., एवं जुडिला, जे. (2015).** इम्पैक्ट ऑफ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स लेवल ऑफ एडजस्टमेंट, फिलीपीन नॉर्मल यूनिवर्सिटी रिसर्च सीरीज।
4. **कुमार, ए., अहसान, एम., एवं नेगी, आर. (2016).** ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ इंटेलिजेंस, टेस्ट एंजाइटी एंड स्टडी हैबिट्स ऑफ स्टूडेंट्स स्टडिंग इन गवर्नमेंट एंड नॉन–गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एप्रोच एंड स्टडीज, 3(6), पृ0सं0 27–34.
5. **इदी, जे., असोग्वा, एस. सी., एवं ओडोह, सी. ई. (2021).** इनफ्लुएंस ऑफ द यूज ऑफ सोशल नेटवर्किंग साइट्स ऑन एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन एनुगु स्टेट। ट्रेंड्स इन एजुकेशनल स्टडीज जर्नल, 13(1), पृ0सं0 165–173.

•